ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 195-197**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

भारतीय समाज और ज्ञानोदय

डॉ0 रामाश्रय यादव

एसोसिएट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग,गंगा गौरी पी०जी० कालेज, रामनगर– बैजावारी, आजमगढ़ (उ0प्र0) भारत

Received-16.05.2026, Revised-24.05.2026, Accepted-30.05.2026, **E-mail:ramashrayayadav1975@gmail.com**

सारांशः ज्ञानोदय (Gyanodaya) का शाब्दिक अर्थ है। "ज्ञान का उदय" अर्थात अज्ञान रुपी अंधकार को मिटाकर प्रज्ञा (बुद्धि) का प्रकाश फैलाना है। किसी राष्ट्र एवं समाज का वास्तविक विकास तभी हो सकता है, जब वहाँ नये–नये ज्ञान का उदय हो तभी राष्ट्र विकसीत बन सकता है, सामाजिक समस्यायें दूर हो सकती है, भ्रष्टाचार मिट सकता है, रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते है, भारत भी अमेरिका, चीन, फ्रान्स और ब्रिटेन जैसे ताकतवर देश बन सकता है, विकसीत राष्ट्र वह होता है, जिसकी अर्थव्यवस्था मजबूत, उच्च प्रतिव्यक्ति आय, उन्नत बुनियादी ढाँचा, मजबूत औद्योगिक और सेवा क्षेत्र, तकनीकी नवाचार, कानून का शासन और स्थिर संस्थाएं, बेहतरीन जीवन स्तर तथा मानव का विकास है। शिक्षा एक ऐसी ज्ञानोदय की कुंजी है, जो किसी समाज व राष्ट्र अथवा मनुष्य को विकास के शिखर पर पहुँचा सकती है।

कुंजीभूत शब्द– भारतीय समाज, ज्ञानोदय, अंधकार, प्रज्ञा, बुद्धि, भ्रष्टाचार, रोजगार, तकनीकी नवाचार, कानून का शासन, जीवन स्तर।

प्रस्तावना– हम ज्ञानोदय को जागरण या प्रबोधन जैसे शब्द से संबोधित कर सकते है पुनर्जागरण के फलस्वरूप जो नयी दशाएं पैदा हुई उसी पर्यावरण में दार्शनिक विचारधारा में एक उल्लेखनीय बौद्धिक विकास एवं परिवर्तन होना शुरु हुआ, क्योंकि अरस्तु, प्लेटो, सुकरात ने समाज को जगाकर तथा ज्ञानोदय की नींव रख चुके थे 18वीं शताब्दी में यूरोप के सामाजिक जीवन से संबंधित अधिकांश विचारों विश्वासों को छोड़कर जब तर्क अनुभव उदारवादी विचारों तथा परम्परागत सत्ता की जगह वैयक्तिक स्वतन्त्रता को महत्व दिया जाने लगा, तो इस काल को ज्ञानोदय के नाम से सम्बोधित किया गया ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारकों में जर्मन दार्शनिक इम्मानुअल कांट (Immanuel Kant) ने 1784 में अपने निबन्ध– ज्ञानोदय क्या है।?

इम्मानुअल कांट– के अनुसार ''मनुष्य की स्वयं द्वारा निर्मित अपरिपक्वता से बाहर निकलने की प्रक्रिया है, क्योकि जब मनुष्य अपने विवेक (Reason) और बुद्धि का बिना किसी दूसरे के मार्गदर्शन के करने का साहस जुटाता है, वही वास्तविक ज्ञानोदय है।[1]

चार्ल्स मोटेस्क्यू– ने बताया कि मानव समाज के नियम, तर्क और स्वतन्त्रता दैवीय अधिकारों पर नहीं, बल्कि तर्क–कारण, भूगोल और संस्थाओं पर आधारित होने चाहिए इनका मानना था कि स्वतन्त्रता केवल तभी सुराक्षत रह सकती है जब सत्ता एक जगह केन्द्रित न हो।[2]

रेने डेसकार्टेस– ने लिखा है कि ''तार्किक सन्देह और स्पष्ट विचारों के माध्यम से सत्य की खोज को ज्ञानोदय का आधार मानती है उन्होने तार्किकता को ज्ञान का आधार बताया जिसे प्रसिद्ध वाक्य ''मैं सोचता हूँ– इसलिए मैं हूं'' से स्थापित किया गया है।[3]

यूरोप का सामाजिक दर्शन– यूरोप में सामाजिक दर्शन से उत्पन्न पुर्नजागरण सामाजिक विचारधारा ने इटली, जर्मनी, फ्रान्स तथा इग्लैण्ड जैसे देश की सामाजिक विचारधारा को बौद्धक परिवर्तन में बदल दिया यूरोप में वैज्ञानिक चिन्तन होने लगा और ज्ञानोदय का जन्म हुआ, फ्रांस की क्रान्ति हुई और राष्ट्रवाद का उदय हुआ, जिसे दूनियां के लोगों को स्वतन्त्रता, समानता, नयी–व्यवस्था और बन्धुत्व पर आधारित विचार दिये गये, ताकि सामाजिक तार्किक चिन्तन की प्रक्रिया ने इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति को जन्म दिया, जिससे– औद्योगीकरण, औद्योगिक विकास, उद्योगवाद को बढ़ावा मिला औद्योगीकरण एक ऐसी दशा है, जिसमें कृषि उत्पादन और छोटी मात्रा में उत्पादन के तुलना में औद्योगिक उत्पादन भारी मशीनों द्वारा बड़ी मात्रा में किया जाने लगा। अब उत्पादन कार्य हाथ की जगह बड़ी–बड़ी मशीनों द्वारा किया जाने लगा तो लोगों में सुख–समृद्धि आने लगी धीरे–धीरे यूरोप एक विकसीत भू–भाग बन गया। औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव धीरे–धीरे पूरे विश्व पर पड़ा दुनियां के सारे देश यूरोप की नकल करने लगे, लेकिन उनका ज्ञानोदय बहुत कमजोर था, इसलिए वे विकासशील देश कहलाएं विकसीत बनने के लिए आज वे लगातार संघर्ष कर रहे हैं। वहीं 17 वीं 18 वीं 19 वीं शताब्दी के बीच भारत में उथल–पुथल सत्ता के हस्तानांतरण और युद्ध संघर्ष का दौर देखा गया, क्योंकि 17वीं में मुगल मामाज्य कर चरम था। 18 वीं शताब्दी में क्षेत्रीय राज्यों का उदय और उन्नीसवीं के प्रारम्भ में ब्रिटिश के अधिपत्य और शोषण से भारत गुजर रहा था।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत की दशा बेहद दयनीय थी और चुनौतीपूर्ण थी। विभाजन का दंश भयंकर सांम्प्रदायिक हिंसा से लाखों शरणार्थियों का पलायन, ब्यापक गरीबी और कृषि उद्योगों की भारी कमी जैसी समस्याओं ने नवजात भारत राष्ट्र को पुरी तरह झकझोर दिया था। राजनीतिक संघर्षो ने भारत को टुकड़ों–टुकड़ों में बाट दिया भारत के लोग धर्म, जाति, सम्प्रदाय के लिए लड़ते रहे, यहां सामाजिक संगठन का निर्माण हुआ ही नहीं और न ही शिक्षा को बढ़ावा दिया गया, जिससे भारतीय समाज के लोगों के अन्दर तर्क, बुद्धि और वैज्ञानिक चिन्तन का विकास हो सके, क्योंकि तर्क बुद्धि खोज और प्रयोग तथा वैज्ञानिक चिन्तन ने ही यूरोपीय महाद्वीप के देशों को विकसीत राष्ट्र बनाया।

आज हम भारत के लोगों के पुराने कानून, रूढ़िवादी विचारधारा एवं परम्परा धर्म के अन्धविश्वासों, जातिवाद के घोर व्यक्तिवादी सोच, के कारण भ्रष्टाचार जैसी गतिविधियों में समलीत होते जा रहे है। देश और समाज के विकास के लिए मैक्स बेवर ने धर्म से ही समाज और व्यक्ति के विकास का रास्ता ढूढ़ा था। उसने विश्व के महान 6 धर्मो के अध्यन के बाद प्रोटेस्टेंट (Protestant) धर्म को अपने अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बनाया था। वेबर ने धर्म के आर्थिक आचारों को अपने अध्ययन का आधार मान लेते है। इसी आधार पर धर्म के आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को ढूंढने का प्रत्यन करते हैं और इसी आधार पर मैक्स बेवर पूँजीवाद का सिद्धान्त दिया था।[4]

मैक्स बेवर ने लिखा है कि 'धार्मिक आचारों, धार्मिक विश्वासों, तथा मेहनत और इमानदारी में एक घनिष्ठ सम्बन्ध है, जो प्रत्येक धर्म के आचारों का उन्होंने विश्लेषण किया और फिर उन आचारों व उस विशेष–धर्म को मानने वाले लोगों के आर्थिक तथा सामाजिक संगठन पर पड़ने वाले प्रभावों को सिद्ध किया कि प्रोटेस्टेण्ट धर्म में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जबकि उन आर्थिक नियमों की व्यवस्था को उत्पन्न करने में सहायक हुई, जिसे कि हम पूँजीवाद कहते है। पूँजीवाद और समाज के विकास के लिए प्रोटेस्टेण्ट धर्म

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

के कुछ आचार है, जैसे– समय ही धन है, धन से धन कमाया जाता है, एक पैसा बचाना एक पैसा कमाना है, इमानदारी सबसे अच्छी नीति है जल्दी सोना और जल्दी उठना व्यक्ति को स्वस्थ धनी और बुद्धिमान बनाता है यह एक ऐसे मनोभाव है, जो मानव विकास और पूँजीवाद को जन्म देते हैं। मैक्स बेवर ने हिन्दू धर्म का भी अध्ययन किया था। हिन्दू धर्म से जो ज्ञान का उदय होता है, वो निम्नलिखित हैः

मैक्स बेवर ने हिन्दू धर्म को जिस रूप में देखा था, उसका मूल अर्थ हिन्दू धर्म में मुक्ति का अर्थ केवल कर्म के चक्र से मुक्ति है। हिन्दू धर्म के मानने वाले लोगों को पर–ब्रम्ह से साक्षात्कार करके उसमें अपने को विलिन कर देने पर ही मोक्ष की प्राप्ती की जा सकती है, संक्षेप में हिन्दू धर्म के मानने वाले लोगों को भौतिक उन्नति करने में या सांसारिक सफलताएं अथवा लौकिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में किसी प्रत्यक्ष अभिरुची की प्रेरणा नहीं दी गयी। इसी कारण हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग, भौतिक उन्नति में नहीं, बल्कि अध्यात्मिक उन्नति में सबसे आगे रहे और उसी का परिणाम रहा कि आज हमारा ज्ञानोदय कमजोर हो गया और विश्व पटल पर भारतीय समाज का विकास, भौतिक उन्नति भी नाकारात्मक स्तर पर हुई– उदाहरण स्वरूप भौतिक उपकरणों का आविष्कार जैसे कि साईकिल से लेकर हवाई जहाज, रेल, आदि वाहनों संस्थाओं, समितियों एवं नवीन संस्कृतियों का जन्म यूरोप के देशों में हुआ, क्यों? इसके पीछे का कारण– ज्ञानोदय (Enlightenment) ही रहा है। भारत के महान दार्शनिक स्वामी विवेकानंद ने ज्ञानोदय के संबंध में उत्कृष्ट परिभाषा दिया है''ज्ञान मनुष्य के भीतर पहले से ही मौजूद है। मनुष्य को केवल उसे जानना (प्रकट करना) होता है।[5]

विवेकानंद भारतीय समाज को आईना दिखया था और कहा की स्वयं को जानने (self-realization) और अपनी वास्तविक आत्मा को पहचानने की प्रक्रिया माना है। इसका तात्पर्य ज्ञान का अर्च बाहरी सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि अपनी आन्तरिक क्षमता और सत्य का अनुभव करना है।

भारतीय समाज के विकास की गतिशीलता– किसी भी समाज के विकास का रास्ता– सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक गतिविधियों से खुलता है भारत में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है, जिससे शिक्षा प्राप्त करने वाले गरीब, मजदूर किसान के बच्चों से शिक्षा दूर होती चली जा रही है। शिक्षा की असमान व्यवस्था ने भारत में एक अच्छा वैज्ञानिक पैदा नहीं कर सकती है और न कुशल डॉक्टर, न कुशल इन्जीनियर, न कुशल प्रोफेसर, न कुशल आइ.ए.एस. पैदा करने की क्षमता नहीं रह गयी है, क्योंकि शिक्षा नकल पर आधारित हो गयी है। शिक्षा जगत में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि किसी नौकरी से संबंधित प्रतिस्पर्धा का पेपर लीक हो जाना और इण्टरव्यू में घूस चलना आम बात बन गयी है, क्योंकि इस तरह का भ्रष्टाचार विश्व के किसी देश में नहीं है– यहां मंत्रियों मुख्य– मंत्रियों द्वारा भ्रष्टाचार कराया जा रहा है। शिक्षा और विज्ञान में यूरोपीय देश हमारे देश से आगे है। नये भौतिक उपकरणों का आविष्कार जो हो रहा है यूरोपीय देशों के द्वारा ही हो रहा है, क्योंकि पश्चिमी यूरोपीय देशों में उद्योग का बड़ा स्थान है और बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। स्वास्थ के क्षेत्र में वे हमारे देश की टेक्नोलॉजी से यूरोपीय देशों की टेक्नोलॉजी बहुत विकसीत है।

भारतीय समाज के विकास की गतिशीलता आजादी के बाद से शुरू होती है। सामुदायिक विकास कार्यक्रम योजना–1952 से विकास कि प्रक्रिया धीरे–धीरे तीन से चार दशक चलती है, फिर भारतीय समाज में भ्रष्टाचार जैसी समस्या समाज के हर संस्थाओं तथा कार्य क्षेत्रों में बहुत तेजी से बढ़ने लगती है और भारतीय अर्थव्यवस्था को लगातार कमजोर करती चली आ रही है। भारत जैसे देश में राजनेताओं के द्वारा किया जाने वाला– घोटाला इसका जीता– जागता उदाहरण है। इसमें प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्री, तथा अनेक मुख्यमंत्रीयों के गतिविधियों के चरित्र पर एक बड़ा प्रश्नचिन्ह लग गया है। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा रिश्वत काण्ड, हर्षद मेहता काण्ड, हवाला काण्ड, यूरिया काण्ड, चीनी घोटाला काण्ड, भ्रष्टाचार के लिए भारत की अर्थ– व्यवस्था, और विकास की गतिशीलता पर प्रश्न चिन्ह उठते है। गरीब किसान, मजदुर, नौजवानों के स्वतंन्त्रता का हनन हो रहा है, कानून का मजाक उड़ाया जा रहा है, समाज में अत्याचार दिन– प्रातदिन बढ़ रहा है भ्रष्टाचार की समस्या आज पुलिस विभाग में भ्रष्टाचार तथा व्यापारियों में भ्रष्टाचार, व्यवसायियों में भ्रष्टाचार, राजनीतिग्यों में भ्रष्टाचार, यहाँ तक कि धार्मिक जीवन में भी भ्रष्टाचार दिनोदिन बढ़ रहा है। भारत में ये सारे भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं आज अपने चरम सीमा पर चल रही है। आज सम्पूर्ण जनमानस भ्रष्टाचार की समस्या से ग्रस्त है। हमारे समाज का कोई वर्ग, नौकरशाही का कोई अंग तथा व्यक्तित्व के जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं बचा है, जिसमें भ्रष्टाचार न फैल चुका हो। भ्रष्टाचार हमारी आर्थिक और सामाजिक प्रगति को रोकने में सबसे अधिक बाधक सिद्ध होता जा रहा है।

ज्ञानोदय से मानव विकास की प्रगति (स्वास्थ्य जीवन प्रत्यासा) शिक्षा (साक्षरता दर और स्कूली शिक्षा के वर्ष) प्रति–व्यक्ति आय जनसंख्या, पर्यावरण, सड़क, बिजली, पानी, रोजगार की बृद्धि और एक अच्छी संस्कृति तथा विकसीत प्रजातंत्र का जन्म होता है। जो समाज के विकास में सहायक होता है।

अध्ययन का उद्देश्य– भारतीय समाज को पुनः जागृति करना है। ज्ञानोदय से ही राष्ट्र और समाज का विकास हो सकता है और ज्ञानोदय से ज्ञान प्राप्त करने के लिए भारतीय राष्ट्र संरक्षकों को शिक्षा की एक विकसीत और सशक्त अध्ययन प्रणाली को लाना होगा, जो छात्रों का सर्वागींण विकास कर सके, जिससे वे आने वाले भविष्य की चुनौतियो के लिए तैयार रह सके, ताकि समाज में सकारात्मक बदलाव हो सके, सकारात्मक बदलाव के लिए एक मजबूत शिक्षा–प्रणाली और वैज्ञानिक चिन्तन की जरूरत है, जिससे शिक्षा का उद्देश्य प्रति–व्यक्ति में कायम हो सके, जो निम्नलिखित हैः

1. शिक्षा और वैज्ञानिक चिन्तन से छात्रों का कौशल विकास, आत्मनिर्भर और व्यवसायिक रूप से उनकों सक्षम बनाना है।
2. शिक्षा से आलोचनात्मक सोच जो छात्रों में तर्क करने, निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता विकसीत करती है।
3. शिक्षा से छात्रों में नैतिक और चारित्रिक गुणों का विकास होता है, जिससे उनमें सहयोग, ईमानदारी, और सहिष्णुता जैसी सामाजिक मूल्य पैदा करती है।
4. शिक्षा के माध्यम से छात्रों की समाज के प्रति जागरुक और जिम्मेदार नागरिक बनाना है, जो अपने अधिकारों और देश के विकास में अपना योगदान दे सके।
5. शिक्षा के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देना ताकि नये–नये विषयों में वैज्ञानिक खोज हो सके।
6. भारत देश की शिक्षा–प्रणाली को समान शिक्षा नीति पर आधारित होनी चाहिए, नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत 5+3+3+4 स्कूली ढाँचा बनाया गया है, पूरे भारत के बच्चों के लिए समान–विषय समान पाठ्य–क्रम, और समान–पैटर्न जैसी शिक्षा पर आधारित होनी चाहिए, ताकि गरीब किसान, मजदूर के बच्चों के साथ कोई भेद–भाव न हो सके।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

7. भारत में असमान शिक्षा व्यवस्था पूर्ण रूप से समाप्त कर देनी चाहिए, क्योंकी भारत की शिक्षा–व्यवस्था में कई बोर्ड–प्रणाली चल रही है जो समाज के भीतर शिक्षा–व्यवस्था में विषमता पैदा कर रही है और इस तरह की शिक्षा–व्यवस्था प्रजातन्त्र के लिए खतरा है। इससे समाज का विकास नहीं हो सकता है।
8. शिक्षा–प्रणाली ऐसी होनी चाहिए ताकि छात्रों में तर्क ज्ञान, बुद्धि प्रयोग तथा सीखने के प्रति उत्प्रेरणा, अर्न्तदृष्टि, आत्मविश्वास, अनुभव प्राप्त हो सके।

यह शोध–पत्र ऐतिहासिक तुलनात्मक एवं नैदानिक अनुसंधान पर आधारित है, क्योंकि अतीतकाल के पुर्नजागरण और ज्ञानोदय का जो प्रभाव विश्व के विभिन्न देशों में जो परिवर्तन दिखाई दे रहा है। उसमें भारतीय समाज का क्या स्थान है। इसी शोध–पत्र के माध्यम से भारत के लोगों को अवगत कराना है कि भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है। तभी यह एक विकसीत राष्ट्र बन पायेगा। इस शोध–पत्र में भारतीय समाज और राष्ट्र के संरक्षको को सुझाव और निदान जैसी निम्नलिखित बातों पर चर्चा की गयी है।

निष्कर्ष– भारतीय समाज के लोगों की तर्क, बुद्धि, खोज, प्रयोग तथा वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित नहीं है यहाँ के लोगों का आधिक झुकाव धर्म की राजनीति, जाति की राजनीति तथा सम्प्रदाय की राजनीति और अपने–अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को पुरा करने के लिए भ्रष्टाचार के साधन को अपना अंग मानते है। भ्रष्टाचार ने भारत देश की अर्थव्यवस्था को खोखला कर दिया है विश्व के विभिन्न देशों की तुलना में भारत मे सबसे अधिक भ्रष्टाचार है यहाँ के लोग कर्म पर विश्वास नहीं करते धर्म पर विश्वास करते है यहाँ की सरकार ने ज्ञानोदय की कुंजी शिक्षा के साथ भी दोहरा व्यवहार किया है शिक्षा से ही समाज का विकास करने की नई दिशा मिलती है जब समाज का विकास होता है तो देश का विकास होता है लेकिन भ्रष्टाचार ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है आज भारत के लचीले कानून की वजह से पुरा भारतीय समाज भ्रष्टाचार में संलिप्त है देखा जाये तो हमारे देश के लोगों में राष्ट्र के प्रति कोई प्रेम व लगाव नहीं है हर व्यक्ति हर सामाजिक कार्य को व्यवसाय के दृष्टिकोण से देख रहा है इसलिए राष्ट्र की प्रगति में हम भारतीय समाज के लोगों का योगदान नकारात्मक है विकसीत देशों की श्रेणी में हम भारतीय लोग कोसों दूर हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ज्ञानोदय क्या है ? What is Enlightenment? Beantwortung der Frage Was ist Aufklarung- 1784.
2. द स्पिरिट ऑफ द लाज–1748.
3. डिस्कोर्स ऑन द मेथड– 1637.
4. दी प्रोटेस्टेण्ट इथिक एण्ड दी स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म– 1906.
5. ज्ञानयोग– 1899.

*****